==========

AVYAKT MURLI

10 / 09 / 75

==========

10-09-75 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

नॉलजफुल और पावरफुल आत्मा ही सक्सफुल

ज्ञान का सागर, शक्ति का सागर, सदा जागती-ज्योति अथक सेवाधारी वत्सों को निद्रा-जीत बनाने वाले शिव बाबा बोले

सदा हर स्थिति में मास्टर नॉलजफुल (ज्ञानमूर्त) पावरफुल (शक्ति या योगमूर्त) और सक्सफुल (सफलता-मूर्त) स्वयं को अनुभव करते हो? क्योंकि नॉलजफुल और पावरफुल आत्मा की रिजल्ट (परिणाम) है सक्सफुल। वर्तमान समय इन दोनों सब्जक्ट्स याद अर्थात् पावरफुल और ज्ञान अर्थात् नॉलजफुल। इन दोनों सब्जक्ट्स (विषय) का ऑब्जक्ट (उद्देश्य) है सक्सफुल। इसी को ही प्रत्यक्ष फल कहा जाता है। इस समय का प्रत्यक्ष फल आपका भविष्य फल को प्रख्यात करेगा। ऐसे नहीं कि भविष्य फल का आधार पर अब का प्रत्यक्ष फल को अनुभव करने से वंचित रह जाओ। ऐसे कभी भी संकल्प नहीं करना कि वर्तमान में कुछ दिखाई नहीं देता है व अनुभव नहीं होता है व प्राप्ति नहीं होती है, यह पढ़ाई तो है ही भविष्य की। भविष्य में बहुत उज्जवल है। अभी मैं गुप्त हूँ अन्त में प्रख्यात हो जाऊंगा-लेकिन भविष्य की झलक, भविष्य की

प्रालब्ध व अन्तिम समय पर प्रसिद्ध होन□वाली आत्मा की चमक अब स□ सर्व को अनुभव होनी चाहिए। इसलिए पहल□प्रत्यक्ष फल और साथ में भविष्य फल। प्रत्यक्ष फल नहीं तो भविष्य फल भी नहीं। स्वयं को स्वयं प्रत्यक्ष भल□ही नहीं कर□लकिन उनका सम्पर्क, स्नह और सहयोग ऐसी आत्मा को स्वत: ही प्रसिद्ध कर दत□हैं।

यह ईश्वरीय लॉ (नियम) ह□कि स्वयं को किसी भी प्रकार स□सिद्ध करन□ वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता। इसलिय□यह संकल्प कि मैं स्वयं को जानता हूँ कि मैं ठीक हूँ दूसर□नहीं जानत□व दूसर□नहीं पहचानत□ आखिर पहचान ही लेंग□व आग□चलकर दखना क्या होता ह□ यह भी ज्ञान स्वरूप, याद स्वरूप आत्मा क□ स्वयं को धोख□दत□वाली अलबलपन की मीठी निद्रा ह□ ऐस□अल्पकाल क□ आराम दत□वाल□व अल्पकाल क□ लिय□ अपन□दिल को दिलासा दत□वाली माया की निद्रा क□ अनक प्रकार हैं। जिस भी बातों में अपनी प्रालब्ध को व प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति को खोत□हो तो अवश्य अनक प्रकार की निद्रा में सोत□हो। इसलिय□कहावत ह□- 'जिन सोया तिन खोया।' तो खोना ही सोना ह□ ऐस□कभी भी समय पर सफलता पा नहीं सकत□अर्थात् सक्सफुल नहीं बन सकत□

सार□कल्प क□ अन्दर सिर्फ इस संगम युग को ड्रामा प्लन अनुसार वरदान ह□- कौन-सा ? संगमयुग को कौन-सा वरदान ह□ 'प्रत्यक्ष फल का वरदान' सिर्फ संगमयुग को ह□ अभी-अभी दना, अभी-अभी मिलना। पहल□दखत□हो - फिर करत□हो-पक्क□ सौदागर हो। संगमयुग की विशषता ह□कि इस युग

में ही बाप भी प्रत्यक्ष होत□हैं, ऊंच त□ऊंच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होत□हैं। आप सबक□ 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती ह□ श्रेष्ठ नॉलज□ भी प्रत्यक्ष होती ह□ इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता ह□ प्रत्यक्ष फल का अनुभव कर रह□हो? प्रत्यक्ष फल प्राप्त होत□समय भविष्य फल को सोचता रह□ऐसी आत्मा को कौन-सी आत्मा कहेंग□? ऐसी आत्मा को मास्टर नॉलज□फुल कहेंग□या यह भी एक अज्ञान ह□? किसी भी प्रकार का अज्ञान उसको, अज्ञान की नींद कहत□हैं। अपन□आप को चेक करो कि किसी भी प्रकार क□ अज्ञान नींद में सोय□हुए तो नहीं हो?

सदा जागती-ज्योति बन□हो? जागन□की निशानी ह□जागना अर्थात् पाना। तो सर्व प्राप्ति करन□वाल□सदा जागती-ज्योति हो? सदा जागती-ज्योति बनन□क□ लिय□मुख्य कौनसी धारणा ह□,जानत□हो? जो साकार बाप में विशेष थी - वह बताओ? साकार बाप की विशेष धारणा क्या थी? जागती-ज्योति बनन□क□ लिय□मुख्य धारणा चाहिए 'अथक' बनन□की। जब थकावट होती ह□तो नींद आती ह□- साकार बाप में अथक-पन की विशेषता सदा अनुभव की। ऐस□फॉलो फादर करन□वाल□सदा जागती-ज्योति बनत□हैं। यह भी चेक करो कि चलत□-चलत□कोई भी प्रकार की थकावट अज्ञान की नींद में सुला तो नहीं दे□ी? इसीलिय□कल्प पहल□की यादगार में भी निद्राजीत बनन□का विशेष गुण गाया हुआ ह□ अनेक प्रकार की निद्रा स□निद्राजीत बनो। यह भी लिस्ट निकालना कि किस-किस प्रकार की निद्रा निद्राजीत

बनने नहीं देती जैसे निद्रा में जाने से पहले निद्रा की निशानियाँ दिखाई देती है। उस नींद की निशानी है उबासी और अज्ञान नींद की निशानी है उदासी। इसी प्रकार निशानियाँ भी निकालना - इसकी दो मुख्य बातें हैं। एक आलस्य, दूसरा अलबेलापन। पहले यह निशानियाँ आती हैं - फिर नींद का नशा चढ़ जाता है। इसलिये इस पर अच्छी तरह से चेकिंग (जाँच) करना। चेकिंग के साथ चेन्ज (परिवर्तन) करना। सिर्फ चेकिंग नहीं करना - चेकिंग और चेन्ज दोनों ही करना, समझा? अच्छा!

ऐसे स्वयं के परिवर्तन द्वारा विश्व को परिवर्तन करने वाले बाप समान सदा अथक, हर संकल्प, बोल और कर्म का प्रत्यक्ष फल अनुभव करने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप विशेष आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते। ओम् शान्ति।

07-10-75 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

महारथी वत्सों का अलौकिक मिलन

कर्म-बन्धनों से मुक्ति दिलाने वाले विश्व की सेवा में तत्पर, निराकार, जन्म-मरण रहित,

अमरनाथ शिव बाबा महारथी बच्चों के सम्मुख बोले-

महारथी और सब बच्चे अमृतवेले जब रूह-रूहान करते हैं तो महारथियों की रूह-रूहान और मिलन-मुलाकात और अनेक आत्माओं के मिलन और रूह- रूहान में क्या अन्तर होता है?

यह जो गायन ह□कि 'आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाती ह□, यह कहावत किस रूप में राँग ह॥ क्योंकि एक शब्द बीच स□निकाल दिया ह॥ सिर्फ लीन शब्द नहीं ह□लेकिन लवलीन। एक शब्द ह□लीन। एक लव में लीन। जो कोई अति स्नेह स□मिलत□हैं, तो उस समय स्नेह क□ मिलन क□ शब्द क्या निकलत□हैं? यह तो ज□□□कि एक-दूसर□में समा गए हैं या दोनों मिलकर एक हो गए हैं। ऐस□ऐस□स्नेह क□ शब्दों को उन्होंन□इस रूप स□ल□ लिया ह॥ यह जो गायन ह□कि व□एक-दूसर□में समाकर एक हो गय□यह ह□ ज□□□कि महारथियों का मिलन। बाप में समा गय□अर्थात् बाप का स्वरूप हो गय॥ ऐसा पॉवरफुल अनुभव महारथियों को ज्यादा होगा। बाकी और जो हैं वह खींचत□हैं। स्नेह, शक्ति खींचन□की कोशिश करत□हैं - युद्ध करत□ करत□समय समाप्त कर देंग□लेकिन महारथी बठ□□और समाय॥ उनका लव इतना पॉवरफुल ह□जो बाप को स्वयं में समा द□□□हैं। बाप और बच्चा समान स्वरूप की स्ट□□ज पर होंग॥ ज□□□बाप निराकार व□□□बच्चा। ज□□□बाप क□ गुण, व□□□महारथी बच्चों क□ भी समान गुण होंग॥ मास्टर हो गय□ना? तो महारथी बच्चों का मिलन अर्थात् लवलीन होना। बाप में समा जाना। समा जाना अर्थात् समान स्वरूप का अनुभव करना। उस समय बाप और महारथी बच्चों क□ स्वरूप और गुणों में अन्तर नहीं अनुभव करेंग॥ साकार होत□हुए भी निराकार स्वरूप क□ लव में खोय□हुए होत□हैं, तो स्वरूप भी बाप समान हो गया। अर्थात् अपना निराकारी स्वरूप प्र□क्टिकल स्मृति में रहता ह॥ जब स्वरूप-बाप-समान ह□तो गुण भी बाप समान। इसलिए

महारथियों का मिलना अर्थात् बाप में समा जाना। जैसे नदी सागर में समा, सागर स्वरूप हो जाती है अर्थात् सर्व बाप के गुण स्वयं में अनुभव होते हैं, जो ब्रह्मा का अनुभव साकार में था, वह महारथियों का भी होगा। ऐसा अनुभव होता है? यह है सागर में समा जाना अर्थात् स्वयं के सम्पूर्ण स्टेज का अनुभव करना। यह अनुभव अब ज्यादा होना चाहिए।

हर संकल्प से वरदानी, नजर से वरदानी, नजर से निहाल करने वाले- बापदादा हर बच्चे की समीपता को देख रहे हैं। समीप अर्थात् समा जाना। अमृत वेले का टाईम है विशेष, ऐसा पॉवरफुल अनुभव करने का है। ऐसे अनुभव का प्रभाव सारा दिन चलेगा। जो अति प्यारी वस्तु होती है वह सदा समाई हुई रहती है। यह है महारथियों का मिलन अमृत वेले का। बाप दादा भी चक्कर करते हैं कौन-कौन कितना समीप है। जैसे मंदिर का पर्दा खुलता है दर्शन करने के लिए। वैसे अमृत वेले की सीन भी होती है। पहले मिलन मनाने की। हर बच्चा अमृत वेले का मिलन मनाने लिए, फर्स्ट नम्बर मिलन मनाने की दौड लगाने में तत्पर होता हैं। बाप चकमक है ना। तो ऑटोमेटिकली जो स्वयं स्वच्छ होते हैं, वह समीप आते हैं। बाहर की रीति से चाहे कोई कितना भी प्रयत्न करे लेकिन चकमक की तरफ समाने वाली स्वच्छ आत्मायें ही होती हैं। वह दृश्य बड़ा मजे का होता है। साक्षी होकर दृश्य देखने में बड़ा मजा आता है।

बच्चों को संकल्प उठता है कि बाप वतन में क्या करते रहते हैं-ब्रह्मा बाप साकार रूप से भी अव्यक्त रूप में अभी दिन-रात सेवा में ज्यादा सहयोगी

बनने का पार्ट बजा रहे हैं। क्योंकि अब बाप-समान जन्म-मरण से न्यारा कर्म-बन्धन से मुक्त, कर्मातीत हैं। सिद्धि स्वरूप है। इस स्टेज में हर संकल्प से सिद्धि प्राप्त होती है। जो संकल्प किया वह सत्। इसलिए चारों ओर संकल्प की सिद्धि रूप से सहयोगी हैं। वाणी से संकल्प की गति तीव्र होती है। साकार से आकार की गति तीव्र है। तो संकल्प से सेवा का पार्ट है- वह भी सत-संकल्प। शुद्ध संकल्प। आपकी है ज्यादा वाणी द्वारा सेवा, मन्सा से भी है लेकिन ज्यादा वाणी से है, लेकिन ब्रह्मा बाप की अब सत्-संकल्प की सेवा है। तो तीव्र गति होगी ना? तो अभी सेवा का पार्ट ही चल रहा है। सेवा के बन्धन से मुक्त नहीं हैं, कर्म-बन्धन से मुक्त हैं। अच्छा।

इस मुरली का सार –

1. महारथी बच्चों का लव इतना पॉवरफुल होता है कि बाप को स्वयं में समा देते हैं। उस समय बाप और महारथी बच्चों के स्वरूप और गुणों में कोई अन्तर अनुभव नहीं होता...

==

QUIZ QUESTIONS

==

प्रश्न 1 :- बाबा ने नॉलेजफुल और पावरफुल आत्मा की रिजल्ट (परिणाम) किसे बताया है?

प्रश्न 2 :- बाबा न किस प्रकार क संकल्प बिल्कुल भी नही करन को कहा ह?

प्रश्न 3 :- बाबा क अनुसार सदा जागती-ज्योति बनन क लिय मुख्य कौनसी धारणा ह?

प्रश्न 4 :- यह जो गायन ह कि 'आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाती ह, यह कहावत किस रूप में राँग ह?

प्रश्न 5 :- बाबा न किस प्रकार क अनुभव का प्रभाव सारा दिन रहन की बात की ह?

FILL IN THE BLANKS:-

{ महारथी, अनुभव, अलबल्लापन, नशा, मिलना,भविष्य, वरदान, स्वरूप, कोशिश, आलस्य, युद्ध, संगमयुग, नींद ,प्रत्यक्ष, धोख }

1 ऐस नहीं कि _____ फल क आधार पर अब क _____ फल को _____ करन स वंचित रह जाओ।

2 यह भी ज्ञान _____, याद स्वरूप आत्मा क स्वयं को _____ दिलान वाली _____ की मीठी निद्रा ह।

3 ‘प्रत्यक्ष फल का _____’ सिर्फ ______ को है। अभी-अभी देखा, अभी-अभी ______।

4 एक _____, दूसरा अलबेलापन। पहले यह निशानियाँ आती हैं - फिर ______ का ______ चढ़ जाता है।

5 बाकी और जो हैं वह खींचते हैं। स्नेह, शक्ति खींचने की ______ करते हैं - ______ करते-करते समय समाप्त कर देंगे लेकिन ______ बने और समाये।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- यह ईश्वरीय लॉ (नियम) है कि दुसरो को किसी भी प्रकार से सिद्ध करने वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता।

2 :- श्रेष्ठ योग भी प्रत्यक्ष होती है। इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता है।

3 :- उस समय बाप और ब्राह्मण बच्चों के स्वरूप और गुणों में अन्तर नहीं अनुभव करेंगे।

4 :- बाहर की रीति से चाहे कोई कितना भी प्रयत्न करे लेकिन चकमक की तरफ समाने वाली पॉवरफुल आत्मायें ही होती हैं।

5 :- साकार होत□हुए भी निराकार स्वरूप क□ लव में खोय□हुए होत□हैं, तो स्वरूप भी बाप समान हो गया।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- बाबा न□नॉलज□फुल और पावरफुल आत्मा की रिजल्ट (परिणाम) किस□ बताया ह□?

उत्तर 1 :- इस बार□में बाबा न□बताया ह□कि:-

❶ नॉलज□फुल और पावरफुल आत्मा की रिजल्ट (परिणाम) ह□ सक्स□□फुल। वर्तमान समय इन दोनों सब्जक्ट्स याद अर्थात् पावरफुल और ज्ञान अर्थात् नॉलज□फुल।

❷ इन दोनों सब्जक्ट्स (विषय) का ऑब्जक्ट (उद□□य) ह□ सक्स□□फुल। इसी को ही प्रत्यक्ष फल कहा जाता ह□। इस समय का प्रत्यक्ष फल आपक□ भविष्य फल को प्रख्यात कर□□ा।

प्रश्न 2 :- बाबा न□किस प्रकार क□ संकल्प बिल्कुल भी नही करन□को कहा ह□?

उत्तर 2 :- बाबा न□इस बार□म□बताया ह□कि :-

❶ ऐस कभी भी संकल्प नहीं करना कि वर्तमान में कुछ दिखाई नहीं दता ह व अनुभव नहीं होता ह व प्राप्ति नहीं होती ह, यह पढ़ाई तो ह ही भविष्य की। भविष्य मा बहुत उज्जवल ह।

❷ अभी मैं गुप्त हूँ अन्त में प्रख्यात हो जाऊंगा-लकिन भविष्य की झलक, भविष्य की प्रालब्ध व अन्तिम समय पर प्रसिद्ध होन वाली आत्मा की चमक अब स सर्व को अनुभव होनी चाहिए।

❸ इसलिए पहल प्रत्यक्ष फल और साथ में भविष्य फल। प्रत्यक्ष फल नहीं तो भविष्य फल भी नहीं।

❹ स्वयं को स्वयं प्रत्यक्ष भल ही नहीं कर, लकिन उनका सम्पर्क, स्नह और सहयोग ऐसी आत्मा को स्वत: ही प्रसिद्ध कर दत हैं।

प्रश्न 3 :- बाबा क अनुसार सदा जागती-ज्योति बनन क लिय मुख्य कौन सी धारणा ह?

उत्तर 3 :- इस बार म बाबा न कहा ह कि :-

❶ जागती-ज्योति बनन क लिय मुख्य धारणा चाहिए 'अथक' बनन की।

❷ जब थकावट होती ह□तो नींद आती ह□- साकार बाप में अथक-पन की विशेषता सदा अनुभव की। ऐस□फॉलो फादर करन□वाल□सदा जागती-ज्योति बनत□हैं।

❸ यह भी चेक करो कि चलत□चलत□कोई भी प्रकार की थकावट अज्ञान की नींद में सुला तो नहीं दे□ी? इसीलिय□कल्प पहल□की यादगार में भी निद्राजीत बनन□का विशेष गुण गाया हुआ ह□। अनेक प्रकार की निद्रा स□निद्राजीत बनो।

❹ यह भी लिस्ट निकालना कि किस-किस प्रकार की निद्रा निद्राजीत बनन□नहीं दे□ी जैस□□निद्रा में जान□स□पहल□निद्रा की निशानियाँ दिखाई दे□ी ह□उस नींद की निशानी ह□उबासी और अज्ञान नींद की निशानी ह□उदासी।

प्रश्न 4 :- यह जो गायन ह□कि 'आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाती ह□, यह कहावत किस रूप में रॉंग ह□?

उत्तर 4 :- इस बार□म□बाबा न□बताया ह□कि

① क्योंकि एक शब्द बीच से निकाल दिया है। सिर्फ लीन शब्द नहीं है लेकिन लवलीन। एक शब्द है लीन। एक लव में लीन।

② जो कोई अति स्नेह से मिलते हैं, तो उस समय स्नेह के मिलन के शब्द क्या निकलते हैं? यह तो जैसे कि एक-दूसरे में समा गए हैं या दोनों मिलकर एक हो गए हैं।

③ ऐसे-ऐसे स्नेह के शब्दों को उन्होंने इस रूप से ले लिया है। यह जो गायन है कि वे एक-दूसरे में समाकर एक हो गये यह है जैसे कि महारथियों का मिलन। बाप में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये।

प्रश्न 5 :- बाबा ने किस प्रकार के अनुभव का प्रभाव सारा दिन रहने की बात की है?

उत्तर 5 :- बाबा ने कहा है कि-

① हर संकल्प से वरदानी, नजर से वरदानी, नजर से निहाल करने वाले- बापदादा हर बच्चे की समीपता को देखते हैं। समीप अर्थात् समा जाना।

❷ अमृत वेला का टाईम ह विशेष, ऐसा पॉवरफुल अनुभव करन का ह। ऐस अनुभव का प्रभाव सारा दिन चलेगा। जो अति प्यारी वस्तु होती ह वह सदा समाई हुई रहती ह।

❸ बाप दादा भी चक्र करत हैं कौन-कौन कितना समीप ह। जब मंदिर का पर्दा खुलता ह दर्शन करन क लिए। वेला अमृत वेला की सीन भी होती ह।

❹ पहल मिलन मनान की। हर बच्चा अमृत वेला का मिलन मनान लिए, फर्स्ट नम्बर मिलन मनान की दौड लगान में तत्पर होता हैं।

FILL IN THE BLANKS:-

{ महारथी, अनुभव, अलबेलापन, नशा, मिलना, भविष्य, वरदान, स्वरूप, कोशिश, आलस्य, युद्ध, संगमयुग, नींद, प्रत्यक्ष, धोख}

1 ऐस नहीं कि ___ फल क आधार पर अब क ___ फल को ___ करन स वंचित रह जाओ।

भविष्य / प्रत्यक्ष / अनुभव

2 यह भी ज्ञान ___, याद स्वरूप आत्मा का स्वयं को ___ दिलाने वाली ___ की मीठी निद्रा है।

स्वरुप / धोखा / अलबेलापन

3 'प्रत्यक्ष फल का ___' सिर्फ ___ को है। अभी-अभी दिया, अभी-अभी ___।

वरदान / संगमयुग / मिलना

4 एक ___, दूसरा अलबेलापन। पहले यह निशानियाँ आती हैं - फिर ___ का ___ चढ़ जाता है।

आलस्य / नींद / नशा

5 बाकी और जो हैं वह खींचते हैं। स्नेह, शक्ति खींचने की ___ करते हैं - ___ करते-करते समय समाप्त कर देंगे लेकिन ___ बचे और समाये।

कोशिश / युद्ध / महारथी

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे-

1 :- यह ईश्वरीय लॉ (नियम) ह□कि दुसरो को किसी भी प्रकार स□सिद्ध करन□वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता। 【✖】

यह ईश्वरीय लॉ (नियम) ह□कि स्वयं को किसी भी प्रकार स□सिद्ध करन□ वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता।

2 :- श्रष्ठ योग भी प्रत्यक्ष होती ह॥ इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता ह॥ 【✖】

श्रष्ठ नॉलज भी प्रत्यक्ष होती ह॥ इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता ह॥

3 :- उस समय बाप और ब्राह्मण बच्चों क□ स्वरूप और गुणों में अन्तर नहीं अनुभव करेंग॥ 【✖】

उस समय बाप और महारथी बच्चों क□ स्वरूप और गुणों में अन्तर नहीं अनुभव करेंग॥

4 :- बाहर की रीति स□चाह□कोई कितना भी प्रयत्न कर□लक्रिन चकमक की तरफ समान□वाली पॉवरफुल आत्मायें ही होती हैं। 【✖】

बाहर की रीति स□चाह□कोई कितना भी प्रयत्न कर□लक्रिन चकमक की तरफ समान□वाली स्वच्छ आत्मायें ही होती हैं।

5 :- साकार होत□हुए भी निराकार स्वरूप क□ लव में खोय□हुए होत□हैं, तो स्वरूप भी बाप समान हो गया। 【✔】